International Research Journal of Management and Commerce
ISSN: (2348-9766)
Impact Factor 7.098 Volume 10, Issue 02, February 2023
©Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

हिन्दी दलित कविताः रचना और शिल्प

डॉ० योगेन्द्र प्रसाद मुसहर
हिन्दी विभाग, सहायक प्राध्यापक,
बोकारो महिला कॉलेज, बोकारो स्टील सिटी, झारखण्ड, भारत

संक्षेप सार

हिन्दी में समकालीन साहित्य के साथ ही अब दलित साहित्य भी अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। परिणामस्वरूप कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज, डायरी और आलोचना आदि साहित्यिक विधायें दलित साहित्य में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। यह सच है कि 20वीं शदी में दलित साहिय एक आन्दोलन के रूप में उभरा है और अन्य साहित्यिक आन्दोलनों की तरह इस आन्दोलन का आरंभ भी काव्य या कविता से हुआ है।

मुख्य शब्द

दलित काव्य आन्दोलन का आरंभ मराठी के दलित साहित्य से मानते हैं तो कतिपय विद्वान इसकी शुरूआत मध्यकालीन संत साहित्य तक खींचकर ले जाते हैं और इसके बीज–विन्दू कबीर और रैदास के साहित्य में ढूंढते हैं। संत कवि कबीर और रैदास ने भारतीय समाज में व्याप्त असमानता, अंधविश्वास और रूढ़िवाद पर लगातार ब्रज प्रहार किया था। किन्तु कविता की यह स्रोतस्विनी जो 15वीं शदी में विकसित हुई थी, वह शनै–शनै क्षीण होती चली गई और लगभग साढ़े चार सौ से लेकर पाँच सौ वर्षों तक इस क्षेत्र में सन्नाटा ही रहा।

परिचय

दलित साहित्य दलितों के द्वारा दलितों के लिए और दलितों का साहित्य है। इसका एक मात्र उद्देश्य दलित अस्मिता और दलित विमर्श को स्थापित करना है। यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि जिस तरह भक्त कवियों के द्वारा लिखा गया साहित्य 'भक्ति साहित्य' और रीति कवियों के द्वारा लिखा गया साहित्य 'रीति–साहित्य' कहलाता है, उसी तरह दलितों के द्वारा लिखा गया साहित्य दलित–साहित्य

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

कहलायेगा। दलित का अर्थ–जिसका सामाजिक रूप से दलन–दमन उत्पीड़न और शोषण किया गया हो।

उद्देश्य

दलित साहित्य रचना का मूल उद्देश्य मनुष्य और मनुष्य के बीच के पार्थक्य को दूर करना है तथा उन लोगों की पहचान स्थापित करना है, जिनकी अपनी पहचान इतिहास के घने और अंधेरे कोहरों में कहीं धकेल दी गई है। कहा जा सकता है कि दलित साहित्य दलितों के लिये उस मशाल की तरह है, जिसके प्रकाश से दूर–दूर तक अंधेरा छट जाता है और एक प्रकाशमय वातावरण की सृष्टि हो जाती है। व्यापक अर्थ में सदियों से दबे–कुचले और उपेक्षित वर्ग की आवाज को मुखर रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास ही दलित साहित्य का उद्देश्य है।

विश्लेषण

दलित काव्य आन्दोलन का आरंभ सन् 1914 ई० मे सरस्वती पत्रिका के सितम्बर अंक में प्रकाशित हीरा डोम की प्रसिद्ध कविता 'अछूत' की शिकायत से माना जाता है। अछूत की शिकायत एक फरियादी की कविता है, जिसमें फरियादी ईश्वर से अपनी पीड़ा उतपीड़न और दुर्दशा का चित्रण करता है। कविता की निम्न पंक्तियाँ इस संदर्भ में द्रष्टव्य है –

हमनी के इनरा के नगीचे न जाइनेजा
पांकी से भरी–भरी पीअतानी पानी।
पनही से पीटि पीटि हाथ–गोड़ तरि दइल
हमनी के एतनी काहे के हलकानी।।

हिन्दी में दलित साहित्य का वास्तविक आरम्भ डॉ० भीमराव अम्बेडकर के अभ्युदय के साथ होता है। अनेक रचनाकारों ने डॉ० अम्बेडकर से प्रेरणा लेकर अपने साहित्य का सृजन किया। महात्मा ज्योतिबा फूले जिन्हें डॉ० अम्बेडकर अपना काव्य गुरू मानते हैं, के विचारों को भी दलित रचनाकारों में श्री माता प्रसाद और श्री राम शिरोमणि होरिल विशेष उल्लेखनीय है। माता प्रसाद का 'भीमशतक', एकलव्य और राजनीति की अर्धसतसई' तथा श्री होरिल का 'करील के काँटे और जीवन राम' इस परंपरा की विशिष्ट काव्य कृतियाँ है। इसके अनन्तर 20वीं शदी के उत्तरार्द्ध में आर० डी० जाटव जैसे लब्ध ख्यात कवि और रचनाकार प्रकाश में आये।

वर्ष 1975 में हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'सारिका' में दलित साहित्य के तीन विशेषांक प्रकाशित किये जिसे दलित साहित्य के इतिहास में मील का पत्थर के रूप में जाना जाता है। इसके अनन्तर 'संचेतना' पत्रिका ने भी सन् 1982 ई० में दलित साहित्य का एक विशेषांक प्रकाशित हुए। अब तो हिन्दी में हंस, युद्धरत आम आदमी और हम दलित जैसी पत्रिकाएँ इसके विशिष्ट और महत्वपूर्ण विशेषांक निकालने में लगी हुई है।

दलित साहित्य, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और मानसिक पृष्टाूमि पर लिखा गया यह साहित्य शोषितों और उत्पीड़ितों के उत्कर्ष एवं उन्नयन के लिये संजवनी बुटी की तरह है। ऐसा प्रायः सभी दलित रचनाकार और चिंतक मानते हैं। वे यह भी स्वीकार करते हैं कि दलित साहित्य समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय पर आधारित आदर्श भारतोय समाज की निमित्ति का साहित्य है, जो सदियों से चली आ रही पारंपरिक व्यवस्था के परिवर्तन में अपनी अहम भूमिका और भागीदारी का निर्वहन करता है।

दलित साहित्य का रचनाकार दलितों में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिये शिक्षा, संगठन और निरंतर संघर्ष पर विशेष बल देता है, ताकि युग–युग से लुप्त उसकी वैचारिक क्रांति फिर से जाग सके। दलित रचनाकार उन मुल्यों पर बार–बार मुष्टि प्रहार करता है, जिसके कारण दलित समाज को युगों तक दुःख झेलना पड़ा है। इसी क्रम में यह समाज में व्याप्त असमानता, अन्याय शोषण और बंधुआ–गुलामी को समूल नष्ट करने का आह्वान भी करता है। प्रतीत होता है कि दलित साहित्य की प्रकृति अपने उद्भव काल से ही संघर्षरत रही है। यह स्मरण रखना है कि अपनी अस्मिता और आत्माभिमान को पुष्ट करने के लिये ही वे साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी बात पूरी मुखरता के साथ रखते हैं।

दलित कवि ओम प्रकाश वाल्मिकी की कविता और उनकी अन्य साहित्यिक विधाएँ प्रखर है। हिन्दी दलित कविता के सशक्त और विशिष्ट रचनाकार है–

राम विरिज का छोटा लल्ला, दूध के लिए रोता है।
बदले में थप्पड़ खाकर, चुपचाप सो जाता है।।

– वाल्मिकी (सदियो ंके संताप)

पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी हिन्दी दलित कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। डॉ० अम्बेडकर अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी उज्जैन के अध्यक्ष रह चुके हैं। इस अकादमी के द्वारा प्रचार–प्रसार में लगे रहे इनकी कृतियों में काव्य संग्रह–'द्वार पर दस्तक' और 'सवालों के सूरज' प्रसांगिक है।

आज भी मैं उसके लिए, मात्र शोषित–उपेक्षित–प्रवंचित हूँ।

मैं सहज स्वीकार करता हूँ, अपने साथ हुए हर प्रकार के अन्याय।।

–पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी (सीने में सुलगता)

दलित साहित्य को आगे बढ़ाने में न केवल पुरूष रचनाकार हैं, बल्कि स्त्री लेखिकाओं में सुशीला टांकभौरे और रजतरानी मीनू का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है, इनकी रचनाओं में नारी मुक्ति का स्वर है। उनमें दोहरे अभिशाप का दंश स्पष्ट दिखलाई देता है, क्योंकि वे दलित होने के साथ–साथ स्त्री जो है।

हम दलित वर्षों से, दया, सहानुभूति के चिथड़ों में लिपटे हुए थे।
उन चिथड़ों को हमने उतार फेंका।

– सुशीला टांकमौरे

यह सताने का सदियों से जारी क्रम,
अन्याय और उत्पीड़न खुद रोकेगी हम
बहनों का दुःख मिलजुल के बाटेंगी।
– रजत रानी मीनू (सबला पत्रिका)

श्यौराज सिंह बेचैन हिन्दी दलित कविता और साहित्य के विशिष्ट और अद्वितीय कवि हैं, हिन्दी दलित कविता को उनसे बड़ी आशायें हैं। 'नई फसल' और 'क्रौंच हूँ मैं' में काफी प्रसिद्धि मिली है –

जब भी हरिजन मुक्ति का वे चर्चा दोहराते हैं,
मुझे जहानाबाद में मरने वाले याद आते हैं,
वहीं जिन्हं सामंतों की सेनायें निगल रही है,
गवर्नमेंट की बनी योजनाएँ विफल रही है।
–श्यौराज सिंह बेचैन, (नई फसल)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० सोहन पाल सुमनाक्षर दलित काव्य रचना के मामले में मील के पत्थर साबित है, उनकी प्रमुख कृतियों में–'अंधा समाज, बहरे लोग', तथा 'सिंधु घाटी बोल उठी' साहित्यिकों के बीच विशेष लोकप्रिय है। इनकी लोकप्रियता का एक और कारण कविता में इनकी राजनीतिक ब्यानबाजी है–

बेड़ियों में जकड़े रखा, हमारी बुद्धि और शक्ति को
छीन रखा है और कहते हो कि
हर प्रतियोगिता में, तुम्हारे साथ दौड़ें
–सोहन पाल सुमनाक्षर 'जिज्ञासा'

निष्कर्ष

दलित साहित्य में हिन्दी दलित कविता की प्रासंगिकता आज के परिप्रेक्ष्य में बहुचर्चित है। हिन्दी की दलित कविता का पहला और प्रकट स्वरूप राजनीतिक है। दलित कविता बाबा साहेब अम्बेडकर के राजनोतिक चिंतन का ही अग्रेत्तर प्रतिफल रूप है। वे चाहते थे दलित–शोषित वर्ग प्रगतिशील हो और एक सुयोग्य नागरिक बनकर समाज के विकासधारा के पथ पर अग्रसर हो।

संदर्भ

1) दलित क्रांति का साहित्य–श्यौराज सिंह बेचैन – संगीता प्रकाशन, दिल्ली–2002, पृ० सं० 101–102

2) दलित साहित्य और सामाजिक न्याय – पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी – कंचन प्रकाशन, नई दिल्ली–1996, पृ० सं० 201–203

3) दलित विमर्श की भूमिका – कवल भारती–इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद–2002, पृ० सं० 75–76

4) डॉ० अम्बेडकर और दलित आन्दोलन–डॉ० धर्मवीर–शेष साहित्य प्रकाशन, दिल्ली–2006, पृ० सं० 05

5) भारतीय दलित और आन्दोलन – मोहन नैमिशराय–समता प्रकाशन, दिल्ली–1998, पृ० सं० 25–27